'एक कमजोर लड़की की कहानी' - एक मूल्यांकन

○ डॉ. इशरत खान

हिंदी के आधुनिक कथा जगत में राजेंद्र यादव का महत्वपूर्ण स्थान है । यादव जी ने हिंदी कहानी को अपनी कहानियों से समृद्ध किया है ।

उनकी कुछ प्रमुख कहानियाँ हैं -टूटना, जहाँ लक्ष्मी कैद है, प्रतीक्षा, लंचटाइम, पुराने नाले पर नया फ्लैट और एक कमज़ोर लड़की की कहानी आदि ।

यहाँ 'एक कमज़ोर लड़की की कहानी' का मूल्यांकन करना ही मेरा लक्ष्य है ।

जब हम इस कहानी को पढ़ते हैं तो हमारा ध्यान सबसे पहले शीर्षक की ओर आकर्षित होता हैं और हम इस शीर्षक को देखकर चौंक पड़ते हैं कि किसी लड़की की, किसी कमज़ोरी को ही, कहानीकार ने दर्शाया होगा।

प्रस्तुत कहानी जैसा शीर्षक से ही पता चलता है, एक लड़की पर, जो कि कमज़ोर है, केंद्रित है । उसी के इर्द-गिर्द यह कहानी घूमती रहती है ।

संक्षेप में, कहानी इस प्रकार है : कहानी में एक नारी पात्र और दो पुरुष पात्र हैं ।

कहानी के प्रारंभ में प्रमोद (नायक), सविता (नायिका) को अपने संपूर्ण व्यक्तित्व से प्रेम करता है और यह सूचना, वह पत्र के माध्यम से सविता को देता है।

बाद में सविता का विवाह लोकेश से होता है और प्रमोद अविवाहित रह जाता है ।

कालांतर में प्रमोद (प्रेमी) एक नामी नेता बनकर सविता के शहर में आ जाता है ।

अखबार में प्रमोद की फोटो देखते हुए वह (सविता) कह उठती है कि अरे ! यह तो प्रमोद भैया है । फिर क्या? प्रमोद को लेकर लोकेश और सविता के बीच वैचारिक टकराव होता है । अंत में सविता के सतीत्व की परीक्षा लेने के लिए लोकेश सविता से कहता है कि तुम आज ही प्रमोद को खाने पर बुलाओगी और उसे ज़हर दोगी ।

कहानी के अंत में द्रष्टव्य है कि प्रमोद भोजन के लिए सविता के घर आता है । सविता उसको विषाक्त पुडिंग देती है, और लोकेश "बस" - कहकर प्रमोद का हाथ, पकड़ लेता है । इधर सविता धड़ाम से कुर्सी के निचे लुढ़क जाती है । लोकेश उसकी ओर झुकता है, और कहता है - कमज़ोर लड़की ।

हमारे समाज में विवाह पूर्व प्रेम को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता । इसके बावजूद विवाह पूर्व प्रेम के अनेक उदाहरण मिलते हैं । पर बहुत कम ही प्रेम, विवाह के रुप में परिणत होते हैं । कुछ प्रेम धन, धर्म, जाति और सामाजिक स्तर आदि के कारण असफल हो जाते हैं।

प्रस्तुत कहानी भी एक प्रेम कहानी है । इसमें भी विवाह पूर्व प्रेम को दिखाया गया है । परंतु जाति-बंधन के कारण सविता और प्रमोद का विवाह नहीं हो पाता।

जैसा हम जानते हैं विवाह पूर्व प्रेम प्रसंगों में प्रेमी युवक-युवतियों में प्राय: अपने प्रेम को दृढ़तापूर्वक मनवाने का आग्रह नहीं दिखाई देता ।

इस प्रकार की प्रेम कहानियों में कहीं लड़के कमज़ोर हो जाते हैं और कहीं लड़कियाँ । इस कहानी में लड़की के कमज़ोर पक्ष को उजागर किया गया है ।

पत्र द्वारा जब सविता को मालूम होता है कि प्रमोद उससे पवित्र भाव से प्रेम करता है तो उसमें भी स्वाभाविक प्रेम-भाव जगता है और वह भी प्रमोद से प्रेम करने लगती है । परंतु वह, उस प्रेम को पाने की कोशिश

नहीं करती । भाभी के कहने पर सविता, प्रमोद से किसी दूसरी लड़की से शादी के लिए 'हाँ' करने को कहती है । उद्धरण द्रष्टव्य है :-

''तुम मान क्यों नहीं जाते''.....

परंतु जैसे ही प्रमोद रुद्राक्ष की माला और खद्दर का चोगा दिखलाता है, तो वह फूट-फूट कर रोने लगती है । यह रोना उसकी कमज़ोरी को ही जाहिर करता है।

वह परिवार और समाज से लड़ नहीं सकती । उनके विरोध में कुछ बोल नहीं सकती । फिर तो जैसा आम तौर पर होता है, सविता का विवाह, प्रमोद से न होकर लोकेश भारद्वाज से हो जाता है; भले ही इसके पीछे जातिगत कारण ही क्यों न रहा हो । अगर उसमें साहस होता, तो वह परिवार-समाज की परवाह न कर प्रमोद से अंतर्जातीय विवाह कर सकती थी ।

विवाह के पश्चात सविता की असली कमजोरी उभर कर सामने आती है । यहीं से इस कहानी में दो पुरुष और एक नारी के संबंधों की कहानी आरंभ होती है।

लोकेश की पत्नी बन जाने के बाद भी सविता को यह विश्वास है कि प्रमोद उसे अपने संपूर्ण व्यक्तित्व से प्रेम करता है और वह भी उससे प्रेम करती है ।

लोकेश और सविता की बातों से पता चलता है कि सविता अब भी अपने पूर्व प्रेमी को हृदय से प्यार करती है।

पति लोकेश उसकी परीक्षा लेने के लिए ही प्रमोद को ज़हर देने के लिए कहता है - ''तो सविता..... मेरी इच्छा है कि इस बार तुम उसे ज़हर दो, मेरे सामने । मैं बहुत ही गंभीरता पूर्वक यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि हमारा दांपत्य-सुख इसी घटना पर आधारित होने जा रहा है ।'' लोकेश को विश्वास है कि ज़हर देने की सूचना देने पर भी वह रूक नहीं सकेगा । विश्वास के अनुसार प्रमोद आया और बेझिझक होकर विषाक्त पुडिंग खाने के लिए चम्मच होठों की ओर बढ़ाया ।

तत्काल पति लोकेश प्रमोद का हाथ पकड़ लेता और कहता है - 'बस'

दूसरी ओर सविता कुर्सी से नीचे लुढ़क जाती है और पति के द्वारा उसे 'कमज़ोर लड़की' की संज्ञा मिलती है ।

यहीं सवाल उठता है कि लड़की को कमज़ोर दिखाने के पीछे कहानीकार की दृष्टि क्या रही है ।

मेरे विचार से कहानीकार यह चाहता है कि समाज में नारी अपने को कमज़ोर न समझे । उसमें इतना आत्मविश्वास आना चाहिए कि वह सच्चाई का मुकाबला साहस के साथ कर सके । इसीलिए कहानीकार ने पुरुष के माध्यम से ही उसकी कमज़ोरी को खोलने की कोशिश की है । लोकेश सविता से प्रश्न पर प्रश्न करता है ताकि उसमें इतना साहस आ जाए कि वह अपने और प्रमोद के संबंधों को बिना झिझक बता सके । वह न तो सविता का अहित चाहता है और न प्रमोद का । इसका सबसे बड़ा प्रमाण है कि वह प्रमोद को विषाक पुडिंग नहीं खाने देता ।

इस कहानी में कहानीकार की दृष्टि नारी स्वातंत्र्य पर केंद्रित है । वह चाहता है कि आज की नारी प्रत्येक क्षेत्र में स्वतंत्रता का अनुभव कर सके ।

भाषा की दृष्टि से यह कहानी सफल रही है । उस कहानी में तत्सम, उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का भरपूर प्रयोग किया गया है, परंतु तत्सम शब्दों की अधिकता है - जैसे-

तंत्र, पत्र आदि ।

ज़हर, शर्तिता आदि उर्दू शब्द ।

और टू, ब्रूटस आदि अंग्रेजी शब्द ।

कहीं कहीं इस कहानी की भाषा काव्यात्मक हो उठी है । जैसे - अंतिम मिलन में सविता से प्रमोद कहता है।-

(दीखता है न ? देखो एक विशाल रेगिस्तान है। चारों तरफ फैला हुआ ..... ? .....पास वह कुत्ता कैसी जीव्हा निकाले हाँफ रहा है? गौर से देखो ... जानती हो, वह चिता किसकी है ।)

राजेंद्र यादव की लेखन शैली में उद्धरणों का महत्वपूर्ण स्थान है । इस कहानी का एक महत्वपूर्ण पहलू उद्धरणों में दिखाई देता है ।

जैसे - शेक्सपीयर के नाटक का प्रसंग - जब सविता प्रमोद से विवाह करने को कहती है, तब प्रमोद कहता है -

यु टू ब्रूटस अर्थात् तुम सब जानवर हो ।

इन्हीं दोनों के प्रेम प्रसंग में बच्चन जी और पंत जी की कविताओं के उद्धरण भी दिये गये हैं । जैसे - सविता ने देखा, पुतलियों पर पानी की एक हल्की परत । और बच्चन के एक गीत की लाइन उसके मन में उभरी -

खींच ऊपर को भुओं को,

रोक मत इन आँसुओं को,

भार कितना सह सकेगी,

यह नयन की नाव ।

संपूर्ण कहानी स्मृतियों के दायरे में सिमटी हुई है। कहानी अतीत और वर्तमान के बीच घूमती रहती है। पात्र एक पल वर्तमान में जीते हैं तो दूसरे पल अतीत की यादों में खो जाते हैं जिससे पूरा कथानक उलझ कर रह गया है।

जैसे - वर्तमान में प्रमोद, सविता के शहर में एक नेता बनकर आया है । सविता का पत्र पाते ही वह अपने अतीत में पहुँच जाता है ।

सविता भी कभी-वर्तमान और कभी अतीत की यादों में खोई रहती है । इस प्रकार कथानक की एकरूपता टूट जाती है ।

हाँ इस कहानी में पत्रों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। वे पत्र कहानी में स्वाभाविक रूप से आये हैं । कभी-कभी पत्र अपने सामने बैठे व्यक्ति को भी लिखना पड़ता है । जब अपनी बात मुँह से कहने में साहस न हो तब पत्र का ही सहारा लिया जाता है ।

इस कहानी में प्रमोद अपने सामने बैठी सविता को पत्र लिखकर प्रेम भावना की अभिव्यक्ति करता है - एक पत्र सविता ने अपने प्रेमी, प्रमोद को लिखा । प्रमोद ने एक अन्य पत्र लोकेश भारद्वाज से विवाहित सविता को लिखा । इस पत्र पर पते के रूप में केवल "सविता" लिखा जैसे ...(सविता ने पते के रूप में केवल 'सविता' पढ़ा तो वह भांप गई कि पता लिखने से पहले, प्रमोद के मन में श्रीमती लिखने में और बाद में भारद्वाज लिखने में कितना अंतर्द्वंद्व हुआ होगा ।)

संदर्भ विशेष के कारण, पत्र के पते का एक साधारण शब्द ही, पत्र-लेखक के मन के अंतर्द्वंद्व को प्रकट कर देता है ।

इस प्रकार इस कहानी में शिल्प का मिला-जुला रूप मिलता है । इसमें संगीत, चित्र, काव्य, पत्र, रेखा-चित्र और संस्मरण आदि सभी शैलियों का प्रयोग किया गया है ।

प्रवक्ता हिंदी विभाग

गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

गलती हर इनसान से होती है । लेकिन जब इनसान अपनी गलती को छिपाता है, या उस पर मुलम्मा चढ़ाने के लिए और झूठ बोलता है, तो वह खतरनाक बन जाती है ।

महात्मा गाँधी